केदारनाथ सिंह

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» केदारनाथ सिंह: जीवन परिचय और शिक्षा

प्रश्न 1 (आसान). केदारनाथ सिंह का जन्म किस जिले में हुआ था?
उत्तर – बलिया

प्रश्न 2 (आसान). उन्होंने अपनी एम.ए. की पढ़ाई किस विश्वविद्यालय से की थी?
उत्तर – काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्रश्न 3 (मध्यम). केदारनाथ सिंह ने अध्यापन कार्य कहाँ-कहाँ किया?
उत्तर – गोरखपुर और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू)

प्रश्न 4 (कठिन). उनकी पी.एच.डी. का पूरा विषय क्या था?
उत्तर – 'आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब-विधान'

» केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताएँ

प्रश्न 5 (आसान). केदारनाथ सिंह की कविताओं की एक प्रमुख विशेषता बताइए।
उत्तर – उनकी कविताओं में मानवीय संवेदना प्रमुख होती है।

प्रश्न 6 (आसान). 'बिंब-विधान' का सबसे सरल अर्थ क्या है?
उत्तर – शब्दों द्वारा चित्र बनाना या सजीव कल्पना।

प्रश्न 7 (मध्यम). उनकी कविताओं में 'शांत विद्रोह का स्वर' किस प्रकार दिखाई देता है?
उत्तर – यह शोर-शराबा या गुस्सा नहीं होता, बल्कि समाज की विसंगतियों पर चुपचाप और गहराई से किया गया विचार है जो पढ़ने वाले को सोचने पर मजबूर करता है।

प्रश्न 8 (कठिन). केदारनाथ सिंह की भाषा को 'नम्य और पारदर्शी' क्यों कहा गया है? समझाकर बताइए।
उत्तर – उनकी भाषा में बनावट नहीं होती, वो इतनी सरल और सहज होती है जैसे हम आपस में बातचीत करते हैं। इसमें कोई घुमावदारपन नहीं होता, जिससे बात सीधे दिल तक पहुँचती है और कविता का अर्थ एकदम साफ-साफ समझ आता है, जैसे पानी पारदर्शी होता है।

» केदारनाथ सिंह की प्रमुख कृतियाँ और सम्मान

प्रश्न 9 (आसान). केदारनाथ सिंह के किन्हीं दो काव्य संग्रहों के नाम बताइए।
उत्तर – अभी बिलकुल अभी, अकाल में सारस।

प्रश्न 10 (आसान). उन्हें किस काव्य संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था?
उत्तर – अकाल में सारस।

प्रश्न 11 (मध्यम). केदारनाथ सिंह द्वारा लिखित किन्हीं दो आलोचनात्मक पुस्तकों के नाम लिखिए।
उत्तर – कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान का विकास।

प्रश्न 12 (कठिन). केदारनाथ सिंह को मिले किन्हीं तीन प्रमुख सम्मानों के नाम बताइए।
उत्तर – साहित्य अकादमी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान, व्यास सम्मान।

» कविता 'बनारस': विषय-वस्तु और सांस्कृतिक वैभव

प्रश्न 13 (आसान). कविता 'बनारस' के कवि का नाम क्या है?
उत्तर – केदारनाथ सिंह

प्रश्न 14 (आसान). कविता में बनारस को किसकी नगरी कहा गया है?
उत्तर – शिव की नगरी

प्रश्न 15 (मध्यम). कवि ने बनारस में किस चीज़ के धीरे-धीरे होने का ज़िक्र किया है? कोई दो उदाहरण दीजिए।
उत्तर – कवि ने 'धीरे-धीरे हिलती है', 'धीरे-धीरे बजती है', 'धीरे-धीरे होती है सामूहिक लय' जैसी बातों का ज़िक्र किया है, जो बनारस के धीमेपन को दर्शाती हैं।

प्रश्न 16 (कठिन). कविता में 'बसंत उतरना' का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है, और यह बनारस के सांस्कृतिक वैभव को कैसे दर्शाता है?
उत्तर – कविता में 'बसंत उतरना' का अर्थ है भिखारियों के खाली कटोरो में दान और खुशहाली का आना। यह बनारस के लोगों की उदारता, आध्यात्मिकता और सामाजिक जुड़ाव को दर्शाता है, जहाँ लोग एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं और आस्था के साथ दान करते हैं।

» 'बनारस' कविता में मिथकीय और दार्शनिक व्याख्या

प्रश्न 17 (आसान). कविता में बनारस के साथ किस प्राचीन अवधारणा को जोड़ा गया है?
उत्तर – मोक्ष की अवधारणा को।

प्रश्न 18 (आसान). कवि बनारस में कौन-कौन सी भावनाएँ एक साथ देखने की बात करते हैं?
उत्तर – आस्था, विरक्ति, विश्वास और भक्ति।

प्रश्न 19 (मध्यम). बनारस की मिथकीय व्याख्या में गंगा और काशी का क्या महत्व है?
उत्तर – गंगा में स्नान से मोक्ष और काशी को शिव की नगरी मानकर आध्यात्मिक मुक्ति का स्रोत माना जाता है।

प्रश्न 20 (कठिन). कविता कैसे बनारस में प्राचीनता और आधुनिकता के संगम को दर्शाती है? दार्शनिक दृष्टिकोण से समझाइए।
उत्तर – कविता दर्शाती है कि बनारस में सदियों पुरानी परंपराएँ (जैसे आरती, दाह संस्कार) आज भी मौजूद हैं, लेकिन साथ ही शहर में आधुनिक जीवन की हलचल भी है। यह संगम दार्शनिक रूप से बताता है कि जीवन में बदलाव शाश्वत है, पर कुछ मूल्य और आस्थाएँ कभी नहीं बदलतीं। शहर की 'सामूहिक लय' इसी संगम को बनाए रखती है।

» 'बनारस' कविता में वसंत का आगमन और शहर का जीवंत चित्रण

प्रश्न 21 (आसान). कविता में वसंत का आगमन कैसे होता है?
उत्तर – वसंत का आगमन 'अचानक' होता है।

प्रश्न 22 (आसान). वसंत के आने पर बनारस की 'जीभ' को क्या होता है?
उत्तर – शहर की 'जीभ किरकिराने लगती है'।

प्रश्न 23 (मध्यम). वसंत के आगमन पर घाट और भिखारियों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
उत्तर – घाट का आखिरी पत्थर मुलायम हो जाता है और भिखारियों के खाली कटोरों में एक अजीब सी चमक भर उठती है।

प्रश्न 24 (कठिन). कवि ने वसंत के आगमन को 'धूल का बवंडर' उठने से क्यों जोड़ा है? यह क्या दर्शाता है?
उत्तर – कवि ने वसंत के आगमन को 'धूल का बवंडर' उठने से जोड़ा है क्योंकि यह सिर्फ़ फूलों वाला वसंत नहीं, बल्कि शहर में होने वाले अप्रत्याशित और आंतरिक बदलावों का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि एक ठहरा हुआ शहर भी बाहरी प्रभाव से जीवंत और गतिशील हो उठता है, भले ही वह शुरुआत में थोड़ा असहज (किरकिरापन) लगे।

» 'बनारस' कविता में 'धीरे-धीरे' की सामूहिक लय और शहर की स्थिरता

प्रश्न 25 (आसान). 'धीरे-धीरे' शब्द का प्रयोग कविता में किन-किन चीज़ों के लिए किया गया है? कोई दो उदाहरण बताओ।
उत्तर – धूल धीरे-धीरे उड़ती है, लोग धीरे-धीरे चलते हैं, घंटे धीरे-धीरे बजते हैं, शाम धीरे-धीरे होती है।

प्रश्न 26 (आसान). 'धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय' का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि शहर में सभी काम एक साथ, एक धीमी और स्थिर गति से होते हैं।

प्रश्न 27 (मध्यम). बनारस शहर को यह 'धीरे-धीरे' वाली लय कैसे 'दृढ़ता से बाँधे' रखती है? अपने शब्दों में समझाओ।
उत्तर – यह लय शहर को एक आंतरिक संतुलन और शांति देती है। जब सब कुछ धीरे-धीरे और व्यवस्थित ढंग से होता है, तो कोई जल्दबाज़ी नहीं होती, कोई चीज़ बिगड़ती नहीं। यह स्थिरता इतनी गहरी है कि सदियों से चली आ रही परंपराएँ और वस्तुएँ अपनी जगह पर कायम हैं, जैसे गंगा, नाव या तुलसीदास की खड़ाऊँ। यह आलस्य नहीं, बल्कि एक गहरे, स्थायी स्वभाव का प्रतीक है।

प्रश्न 28 (कठिन). बनारस शहर में 'धीरे-धीरे' होने की क्रिया को कवि ने सिर्फ़ एक 'क्रिया' न मानकर, शहर के 'स्वभाव' के रूप में कैसे प्रस्तुत किया है? कविता के आधार पर व्याख्या करो।
उत्तर – कवि 'धीरे-धीरे' को केवल क्रिया (जैसे धूल उड़ना) तक सीमित नहीं रखते, बल्कि इसे शहर के 'होने' से जोड़ते हैं - 'यह धीरे-धीरे होना'। वह दिखाते हैं कि यह शहर की आत्मा में बसा है, उसकी पहचान का हिस्सा है। जैसे किसी व्यक्ति का स्वभाव होता है, वैसे ही बनारस का स्वभाव 'धीरे-धीरे' है। यह उसकी संस्कृति, उसकी परंपराओं, और उसके जीवन की गति को दर्शाता है। यह दिखाता है कि बनारस अपनी प्राचीनता और आध्यात्मिकता में इतना लीन है कि उसे आधुनिक दुनिया की तेज़ रफ़्तार से कोई फ़र्क नहीं पड़ता, वह अपने ही लय में जीता है। यही उसका 'ठेठ बनारसीपन' है।

» 'बनारस' कविता: शहर की अद्भुत बनावट और विरोधाभास

प्रश्न 29 (आसान). कविता में 'आधा जल में है / आधा मंत्र में' से कवि क्या कहना चाहता है?
उत्तर – यह बताता है कि बनारस पवित्र गंगा नदी (जल) और धार्मिक अनुष्ठानों (मंत्र) दोनों से गहराई से जुड़ा है।

प्रश्न 30 (आसान). 'आधा फूल में है / आधा शव में' कौन से दो विरोधी तत्वों को दर्शाता है?
उत्तर – यह जीवन की सुंदरता (फूल) और मृत्यु (शव) को दर्शाता है, जो बनारस में साथ-साथ मौजूद हैं।

प्रश्न 31 (मध्यम). कवि क्यों कहता है कि बनारस 'आधा है / और आधा नहीं है'? इसका गहरा अर्थ क्या है?
उत्तर – यह बताता है कि शहर में विरोधाभास इतनी ज़्यादा हैं कि उसे पूरी तरह किसी एक रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता। यह एक साथ कई विपरीत चीज़ों को समेटे हुए है, जिससे वह समझ में आने वाला भी लगता है और रहस्यमय भी।

प्रश्न 32 (कठिन). कविता में वर्णित 'राख और रोशनी के ऊँचे-ऊँचे स्तंभ, आग के स्तंभ और पानी के स्तंभ' किस प्रकार बनारस की अद्भुत बनावट और विरोधाभासों को अभिव्यक्त करते हैं?
उत्तर – ये पंक्तियाँ बनारस के गहरे दार्शनिक स्वरूप को बताती हैं। राख मृत्यु और वैराग्य का प्रतीक है, जबकि रोशनी जीवन और ज्ञान का। आग शिव की शक्ति और विनाश को दिखाती है, वहीं पानी गंगा की पवित्रता और जीवनदायिनी शक्ति को। ये सभी विरोधी तत्व एक साथ 'स्तंभों' के रूप में खड़े होकर शहर की स्थिरता और उसके अंदर समाए जीवन-मृत्यु के चक्र को दर्शाते हैं। यह दिखाता है कि बनारस में सब कुछ टिका हुआ है, पर हर चीज़ में एक गहरा अर्थ छिपा है।

» कविता 'दिशा': बाल मनोविज्ञान और यथार्थ की समझ

प्रश्न 33 (आसान). कविता 'दिशा' का मुख्य विषय क्या है?
उत्तर – बाल मनोविज्ञान और बच्चों का अपना यथार्थ।

प्रश्न 34 (आसान). कवि बच्चे से क्या प्रश्न पूछता है?
उत्तर – कवि बच्चे से हिमालय की दिशा पूछता है।

प्रश्न 35 (मध्यम). बालक हिमालय की दिशा बताने के लिए किसका उदाहरण देता है?
उत्तर – बालक अपनी पतंग का उदाहरण देता है, जो उस समय उड़ रही थी।

प्रश्न 36 (कठिन). यह कविता हमें बच्चों के बारे में क्या सिखाती है?

उत्तर – यह कविता सिखाती है कि बच्चे दुनिया को अपने अनुभव, अपनी समझ और अपने सीमित यथार्थ के दायरे में देखते हैं, जो बड़ों से अलग हो सकता है लेकिन गलत नहीं होता।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. केदारनाथ सिंह ने अपनी पी.एच.डी. किस विश्वविद्यालय से और किस विषय पर की थी?

› पहला कदम यह पहचानना है कि प्रश्न उनकी उच्च शिक्षा और शोध कार्य से संबंधित है।

› हमें यह याद करना होगा कि उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा कहाँ से प्राप्त की थी।

› फिर यह ध्यान देना होगा कि उनका पी.एच.डी. का विषय क्या था।

उत्तर – केदारनाथ सिंह ने अपनी पी.एच.डी. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 'आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब-विधान' विषय पर की थी।

उदाहरण 2. केदारनाथ सिंह की कविताओं में 'बिंब-विधान' का क्या अर्थ है और वे इसका प्रयोग कैसे करते हैं?

› सबसे पहले समझो, बिंब मतलब क्या। बिंब यानी 'शब्द चित्र' – शब्दों के ज़रिए कोई ऐसी तस्वीर बनाना जो पढ़ते ही आँखों के सामने आ जाए।

› केदारनाथ सिंह जी अपनी कविताओं में आम चीज़ों, जैसे 'रोटी', 'बैल', 'जमीन' का इस्तेमाल करके बहुत ही सजीव और महसूस होने वाली तस्वीरें बनाते हैं।

› उदाहरण के लिए, अगर वो 'किसान का हल' लिखते हैं, तो तुरंत हमारे मन में खेत में चलते हुए हल की तस्वीर आ जाती है, उसकी आवाज़ और मिट्टी की महक भी महसूस होने लगती है।

› इस तरह वे अमूर्त (जो दिखाई न दे) भावनाओं या विचारों को भी ठोस और महसूस करने लायक बना देते हैं, जिससे पाठक कविता से आसानी से जुड़ जाता है।

उत्तर – बिंब-विधान का अर्थ है शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में सजीव चित्र या कल्पनाएँ उत्पन्न करना। केदारनाथ सिंह इसका प्रयोग रोज़मर्रा की वस्तुओं और अनुभवों से जुड़ी तस्वीरें बनाकर करते हैं, जिससे उनकी कविताएँ अधिक प्रभावी और संवेदनात्मक बन जाती हैं।

उदाहरण 3. प्रश्न: केदारनाथ सिंह के किन्हीं दो काव्य संग्रहों के नाम लिखिए और बताइए उन्हें किस कृति के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था?

› स्टेप 1: पहले हम उनके दो काव्य संग्रहों के नाम लिखेंगे। उनके कई काव्य संग्रह हैं, जैसे 'अभी बिलकुल अभी', 'जमीन पक रही है', 'यहाँ से देखो', 'अकाल में सारस', 'उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ - बाघ', 'टॉलस्टाय और साइकिल'। इनमें से कोई भी दो नाम हम लिख सकते हैं।

› स्टेप 2: फिर हम देखेंगे कि उन्हें किस रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। किताब में साफ़-साफ़ लिखा है कि 'अकाल में सारस' के लिए उन्हें यह सम्मान मिला।

› स्टेप 3: तो हमारा जवाब होगा: उनके दो काव्य संग्रह हैं 'अभी बिलकुल अभी' और 'अकाल में सारस'। उन्हें 'अकाल में सारस' काव्य संग्रह के लिए 1989 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।

उत्तर – केदारनाथ सिंह के दो काव्य संग्रह: 1. अभी बिलकुल अभी, 2. अकाल में सारस। उन्हें 'अकाल में सारस' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।

उदाहरण 4. कविता 'बनारस' में कवि ने शहर के किस 'ठेठ बनारसीपन' को दर्शाया है? उदाहरण सहित समझाइए।

› सबसे पहले, यह समझो कि 'ठेठ बनारसीपन' का मतलब है बनारस की अपनी खास पहचान, उसका अपना अंदाज़, जो उसे बाकी शहरों से अलग करता है।

› कविता में कवि बताते हैं कि कैसे बनारस में सब कुछ धीरे-धीरे होता है - 'धीरे-धीरे हिलती है', 'धीरे-धीरे बजती है', 'धीरे-धीरे होती है सामूहिक लय'। यह धीमापन ही बनारस की पहचान है, जहाँ जीवन की भाग-दौड़ नहीं है, बल्कि एक शांति और ठहराव है।

› फिर, कवि गंगा, घाटों, मंदिरों और वहाँ बैठे भिखारियों के कटोरो में बसंत उतरने का ज़िक्र करते हैं। यहाँ 'बसंत उतरना' मतलब उनके कटोरो में खुशहाली और दान का आना, जो बनारस के लोगों की उदारता और आध्यात्मिकता को

दिखाता है।

› इसके अलावा, कविता में बताया गया है कि कैसे बनारस में हर चीज़ अपनी जगह पर है, पर फिर भी कहीं जा रही है, जैसे घाट पर रखी नाव जो बंधी होने पर भी बहने का अहसास देती है। यह बनारस का एक आध्यात्मिक पक्ष है - जीवन की नश्वरता और ठहराव का साथ-साथ दिखना।

› तो, 'ठेठ बनारसीपन' मतलब सिर्फ़ शहर की इमारतें नहीं, बल्कि उसका धीमापन, उसकी आध्यात्मिकता, लोगों का विश्वास, और गंगा से जुड़ा उसका अटूट रिश्ता।

› उदाहरण के लिए, भिखारी के खाली कटोरे में 'बसंत' का उतरना, यानी लोगों का दान देना - ये दिखाता है कि बनारस में 'देने' का भाव कितना गहरा है, जहाँ लोग एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं। ये उसकी संस्कृति का हिस्सा है।

उत्तर – कविता 'बनारस' में 'ठेठ बनारसीपन' शहर के धीमेपन, आध्यात्मिकता, गंगा से अटूट रिश्ते, और लोगों के सहज विश्वास में झलकता है। कवि गंगा के घाटों, मंदिरों, और भिखारियों के कटोरो में 'बसंत उतरने' जैसे बिम्बों के माध्यम से इस विशेष सांस्कृतिक वैभव को उजागर करते हैं, जहाँ जीवन की अपनी एक लय और ठहराव है।

उदाहरण 5. कविता में बनारस को 'आधा जल में है, आधा मंत्रा में' कहने का मिथकीय और दार्शनिक अर्थ स्पष्ट कीजिए।

› पहला कदम: 'आधा जल में' – इसका सीधा संबंध गंगा नदी से है। गंगा को पवित्र माना जाता है, और उसमें स्नान से मोक्ष की धारणा जुड़ी है। यह मोक्ष की मिथकीय अवधारणा को दिखाता है।

› दूसरा कदम: 'आधा मंत्रा में' – बनारस मंदिरों और धर्म का केंद्र है। यहाँ लगातार मंत्रों का जाप होता रहता है, जो इस शहर की आध्यात्मिक पहचान है। यह शहर की धार्मिक आस्था और भक्ति के गहरे दर्शन को दर्शाता है।

› तीसरा कदम: दोनों को मिलाकर - कविता में यह बताया गया है कि बनारस सिर्फ़ ज़मीन पर बसा एक शहर नहीं, बल्कि इसकी पहचान गंगा के पवित्र जल और मंदिरों के मंत्रों से भी है। यह शहर जीवन और आध्यात्मिकता के बीच के रिश्ते को दर्शाता है, जहाँ भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया साथ-साथ चलती हैं।

› चौथा कदम: दार्शनिक पक्ष - यह दिखाता है कि बनारस में जीवन का एक दर्शन है जहाँ व्यक्ति अपने रोज़मर्रा के जीवन के साथ-साथ मोक्ष और आध्यात्मिकता की तलाश भी करता है। यह शहर हमें सिखाता है कि जीवन में भौतिकता के साथ-साथ आत्मिक संतुष्टि भी कितनी ज़रूरी है।

उत्तर – कविता में 'आधा जल में है, आधा मंत्रा में' कहने का अर्थ है कि बनारस मिथकीय रूप से गंगा के पवित्र जल (मोक्ष) से जुड़ा है, और दार्शनिक रूप से यहाँ के मंत्रों और आध्यात्मिकता (जीवन के गहरे अर्थ की खोज) का केंद्र है। यह शहर जीवन और आध्यात्मिकता के संगम का प्रतीक है।

उदाहरण 6. कविता के अनुसार, वसंत के आगमन पर बनारस शहर में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं? किन्हीं तीन परिवर्तनों का उल्लेख करें।

› कवि कहता है कि वसंत 'अचानक आता है' और धूल का एक 'बवंडर' उठता है।

› इससे 'इस महान पुराने शहर की जीभ किरकिराने लगती है', यानी शहर में एक नई हलचल महसूस होती है।

› दशाश्वमेध घाट का 'आखिरी पत्थर' कुछ और 'मुलायम हो गया है', जो बताता है कि कठोरता में भी नरमी आ गई है।

› सीढ़ियों पर बैठे 'बंदरों की आँखों में एक अजीब सी नमी' है, मतलब प्रकृति और जीवों पर भी इसका असर होता है।

› 'भिखारियों के कटोरों का निचाट खालीपन' एक 'अजीब सी चमक से भर उठा है', यानि उम्मीद और जीवन का संचार होता है।

› कविता कहती है कि 'यह शहर इसी तरह खुलता है', 'इसी तरह भरता और खाली होता है', यानी वसंत एक चक्रीय बदलाव लाता है।

› इनमें से कोई भी तीन बता सकते हैं, जैसे धूल का बवंडर, घाट के पत्थर का मुलायम होना, और भिखारियों के कटोरों में चमक आना।

उत्तर – वसंत के आगमन पर बनारस में 'धूल का एक बवंडर' उठता है, घाट का 'आखिरी पत्थर' कुछ 'मुलायम हो जाता है', और 'भिखारियों के कटोरों का निचाट खालीपन' एक 'अजीब सी चमक से भर उठता है'।

उदाहरण 7. कवि ने 'धीरे-धीरे' होने की सामूहिक लय से शहर को क्या लाभ बताया है?

› कविता के 'धीरे-धीरे' वाले अंश को पढ़ें: 'इस शहर में धूल धीरे-धीरे उड़ती है / धीरे-धीरे चलते हैं लोग / धीरे-धीरे बजते हैं घंटे / शाम धीरे-धीरे होती है'

› कवि आगे कहते हैं: 'यह धीरे-धीरे होना / धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय / दृढ़ता से बाँधे है समूचे शहर को'

› फिर इसका परिणाम बताते हैं: 'इस तरह कि कुछ भी गिरता नहीं है / कि हिलता नहीं है कुछ भी / कि जो चीज़ जहाँ थी / वहीं पर रखी है'

› इन पंक्तियों को जोड़कर निष्कर्ष निकालें।

उत्तर – कवि ने बताया है कि 'धीरे-धीरे' होने की यह सामूहिक लय पूरे शहर को इतनी दृढ़ता और स्थिरता प्रदान करती है कि कुछ भी अपनी जगह से हिलता नहीं, गिरता नहीं और सदियों से जो चीज़ जहाँ रखी थी, वह वहीं पर कायम है।

उदाहरण 8. कविता में 'आधा नींद में है / आधा शंख में' पंक्ति का क्या अर्थ है? यह बनारस के किस विरोधाभास को बताती है?

› पहले पंक्ति का शाब्दिक अर्थ समझें: 'आधा नींद में' का मतलब है कि शहर का एक हिस्सा या पहलू आराम कर रहा है, धीमा है, शायद शांति में है।

› 'आधा शंख में' का अर्थ है कि शहर का दूसरा हिस्सा या पहलू धार्मिक गतिविधियों, पूजा-पाठ, उत्सवों से जुड़ा है, जहाँ शंख की ध्वनि गूँजती है, जो कि जागृति और पवित्रता का प्रतीक है।

› अब देखें कि ये दोनों एक साथ कैसे रहते हैं: बनारस में सुबह की शांति, आलस्य या ठहराव भी है, और साथ ही मंदिर की घंटियाँ, आरती और धार्मिक जागरण भी है।

› निष्कर्ष निकालें: यह विरोधाभास दिखाता है कि शहर में शांति और आध्यात्मिकता के साथ-साथ एक धार्मिक ऊर्जा और क्रियाशीलता भी लगातार बनी रहती है।

› इसका मतलब है कि शहर में आराम और धार्मिक जागृति, दोनों एक साथ, एक ही समय में मौजूद हैं।

उत्तर – यह पंक्ति बनारस के 'शांति और धार्मिक क्रियाशीलता' के विरोधाभास को दर्शाती है। शहर में एक तरफ़ जहाँ एक तरह का ठहराव या आराम दिखता है (नींद), वहीं दूसरी तरफ़ लगातार धार्मिक कर्मकांड और जागृति (शंख) भी चलती रहती है।

उदाहरण 9. कविता 'दिशा' में बालक हिमालय की दिशा कैसे बताता है?

› कवि बालक से हिमालय की दिशा पूछता है।

› बालक उस पतंग की ओर इशारा करता है जिसे वह उड़ा रहा होता है।

› वह कहता है, 'हिमालय उधर है जिधर मेरी पतंग भागी जा रही है।'

› यह बालक के अपने अनुभव और यथार्थ पर आधारित उत्तर है।

उत्तर – बालक अपनी पतंग की दिशा को ही हिमालय की दिशा बताता है, क्योंकि उसके लिए उस पल का सबसे महत्वपूर्ण अनुभव उसकी पतंग थी।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• उनके जन्म स्थान, पी.एच.डी. विषय और अध्यापन स्थलों से जुड़े प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में वस्तुनिष्ठ (objective) या अति लघु उत्तरीय (very short answer) के रूप में आते हैं, इसलिए इन्हें ध्यान से याद करें।

• बोर्ड परीक्षा में केदारनाथ सिंह जी की काव्यगत विशेषताओं पर अक्सर सीधा प्रश्न आता है। इसलिए हर विशेषता को एक-दो उदाहरण के साथ अच्छे से समझ लेना।

• यह हिस्सा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! खासकर साहित्य अकादमी पुरस्कार किस कृति के लिए मिला और उनके मुख्य काव्य संग्रहों के नाम, ये प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं।

• यह कविता बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें से 'ठेठ बनारसीपन', 'बसंत उतरना' जैसे प्रतीकात्मक अर्थों पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं। व्याख्या और सांस्कृतिक महत्व को ध्यान से पढ़ें।

• यह कविता का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है! बोर्ड परीक्षा में 'धीरे-धीरे' की लय और शहर की स्थिरता पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं। इस भाग की व्याख्या को ध्यान से तैयार करना।

• यह कविता बाल मनोविज्ञान को समझने पर आधारित है, इसलिए बच्चों के दृष्टिकोण और बड़ों के दृष्टिकोण में अंतर को स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है।

एक नज़र में रिवीज़न

› जन्म: बलिया, चकिया; शिक्षा: काशी हिन्दू वि.वि., जेएनयू प्रोफेसर।

› मानवीय संवेदना, बिंब-विधान, शांत विद्रोह, प्रकृति से जुड़ाव, सहज भाषा।

› केदारनाथ सिंह: प्रमुख काव्य संग्रह (अकाल में सारस), आलोचना, निबंध; साहित्य अकादमी, व्यास सम्मान।

› बनारस कविता: ठेठ बनारसीपन, धीमापन, सांस्कृतिक वैभव, गंगा, आस्था।

› 'धीरे-धीरे' की सामूहिक लय = बनारस की दृढ़ता, स्थिरता व पहचान।

› बच्चों का यथार्थ उनके अनुभव पर आधारित होता है; बड़ों से भिन्न पर गलत नहीं।